RJPP, Vol. XXIII, No.I, Oct.24-Mar.25, ISSN (P) : 0976-3635, (e) :2454-3411
Impact Factor 8.858

1857 के स्वतंत्रता संग्राम में मथुरा जनपद में जननायक राजा देवी सिंह की भूमिका

यशवन्त सोनी
शोधार्थी पाश्चात्य
इतिहास विभाग
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ
ईमेलः yashwant011@gmail.com

सारांश

1857 की क्रांति से भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम भी कहा जाता है यह क्रांति तात्कालिक रूप से भारत को आजादी भले ही ना दिल पाई हो परंतु इसने स्वतंत्रता का आधार अवश्य तैयार कर दिया था।

इस क्रांति में भारत की सांस्कृतिक एवं धार्मिक राजधानी कहे जाने वाले मथुरा जनपद के स्वतंत्रता सेनानियों की महती भूमिका रही थी।

इन्हीं स्वतंत्रता सेनानियों में एक जननायक राजा देवी सिंह जी भी थे जो एक साधारण परिवार से उठकर औपनिवेशिक शोषण से मुक्ति का प्रण लेकर 1857 की क्रांति में अपने प्राणों की आहुति दी थी। उनकी वीरता की गाथा न केवल तब के लोकगीतों में मिलती है, जो आज भी इन्हें याद करके लोगों के द्वारा गुनगुनाया जाता है, अपितु तत्कालीन समय में मथुरा के कलेक्टर थार्नहिल भी अपनी डायरी में राजा देवी सिंह का उल्लेख किये बिना नहीं रह सका।

Reference to this paper should be made as follows:

Received: 08.03.2025
Approved: 20.03.2025

यशवन्त सोनी

1857 के स्वतंत्रता संग्राम में मथुरा जनपद में जननायक राजा देवी सिंह की भूमिका

RJPP Oct.24-Mar.25,
Vol. XXIII, No. I,
Article No. 20
Pg. 163-168

Online available at:
https://anubooks.com/journal-volume/rjpp-sept-2025-vol-xxiii-no1

आलेख– जननायक राजा देवी सिंह का संक्षिप्त जीवन परिचय–

राजा देवी सिंह का जन्म मथुरा के राया तहसील के गांव अचरु में गोदर (गोदारा) गौत्र के जाट क्षत्रिय परिवार में हुआ था। गोदारा जाटों को स्थानीय भाषा में गोदर भी बोला जाता है। राया क्षेत्र को स्थानीय भाषा में गोदरपट्टी बोलते हैं। राया को उनके पूर्वज रायसेन गोदर जी ने ही बसाया था उन्हीं के नाम पर इस कस्बे का नाम राया पड़ा।

राजा देवी सिंह का 1857 की क्रांति में बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान रहा था। परंतु औपनिवेशिक स्त्रोतों पर ही निर्भरता के चलते ये भारत के गुमनामनायक बनकर ही रह गए। इनकी महत्ता का पता इस बात से भी लगाया जा सकता है कि 1857 की क्रांति के समय मथुरा जनपद का कलेक्टर मार्क थार्न हिल इनके प्रचंड आभामंडल से प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाया था। इसीलिए उसने इनका वर्णन अपने संस्मरण लेख में किया है, हालांकि उसने औपनिवेशिक मानसिकता के चलते इनकी महत्ता को जानबूझकर कम करके ही दिखाने का प्रयास किया है।

तत्कालीन अंग्रेज कलेक्टर थार्न हिल लिखता है कि ''वह एक साधारण दिखाई देने वाला आदमी था जो दूसरे ग्रामीणों से इस बात में भिन्न था कि पीली पोशाक पहने हुआ था। फिर भी उसने एक स्वतंत्र सर्वोच्च शासन का खिताब ग्रहण किया था। दया निधान, अन्नदाता, वैभवागर, करुणानिधि, गरीब नवाज, तेजस्वी, राजपूत और राजा महाराजा और युद्ध विजयी आदि उपाधियां ग्रहण की थी। (स्त्रोत– थार्नहिल उद्धृत ग्रन्थ पृ० सं०–02–03)।

कह सकते हैं की जिला मजिस्ट्रेट थार्न हिल का उल्लेख राजा देवी सिंह के साथ उन के कटु अनुभवों तक ही सीमित है।

वास्तविकता का उल्लेख श्री गोविंद स्वरूप ने अपनी पुस्तक में किया है कि ''देवी सिंह जी पवनसुत हनुमान जी के अनुयाई थे एवं उच्च कोटि के साधू थे। देवी सिंह जी के पास 14 गांव की जागीर भी थी जिससे प्राप्त आमदनी को वे धर्म और जरूरतमंदों के लिए प्रयोग में लाते थे। राजा देवी सिंह एक बड़े तगड़े कुश्ती के पहलवान भी थे। गठीले शरीर और सुन्दर स्वरूप के धनी थे। वह अपने नाम के आगे आर्य लगते थे क्योंकि वह वैदिक संस्कृति को मानते थे। एक दिन उनके अपने दैनिक व्यायाम से लौटते समय एक युवक उन पर तंज कसते हुए कहा कि इस गठीले और ताकतवर शरीर का क्या फायदा जब तुम्हारी भूमि पर गोरों का राज है और यहां अखाड़े में ताकत दिखाने से कोई फायदा नहीं जब तक भारत भूमि विदेशी अंग्रेजों की गुलाम है। यह सुनकर देवी सिंह जी शांत हो गए घर तो आ गये परन्तु रात भर उन्हें नींद नहीं आई और वह इसी बात को सोचते रहे फिर अगले दिन सुबह उन्होंने गांव के आसपास के लोगों को एकत्रित करके कहा कि फिर से अपने पूर्वजों की भूमि को आजाद करवाना है और भारत माता को अंग्रेजी दासता के चुंगल से मुक्त कराना है वरना हमारा जीवन व्यर्थ है। जो भी इस पवित्र कार्य में मेरी मदद करना चाहे वह मेरे साथ आए। उनके इस आहवान पर सभी युवा एक स्वर में बोलते हुए कहा कि आखरी सांस तक तन मन धन से आपके साथ हैं फिर देवी सिंह युवाओं के इस जोश को देखते हुए पूरे आत्मविश्वास के साथ जवाब दिया कि अब मैं सेना बनाऊंगा। इसके बाद देवी सिंह की सेना बनाने की यात्रा शुरू हो गई। देवी सिंह तलवार और बंदूक खरीदने के लिए पैसे जुटाना के उद्देश्य से अपनी समस्त जमा पूंजी खर्च कर देती है और वह गांव के युवाओं को

इकट्ठा करके उन्हें युद्ध की ट्रेनिंग देते हैं। इसमें वह रिटायर्ड सैनिक की मदद लेकर युवाओं को हथियार चलाने का प्रशिक्षण दिलवाते हैं। धीरे–धीरे देवी सिंह जी ने एक बड़ी सेना खड़ी करली।

इसी समय एक स्थानीय पुलिस अधिकारी उन्हें ब्रिटिश सेवा में शामिल होने का लालच देते हैं परंतु राजा देवी सिंह ने उसे मन कर दिया और कहा कि हम अंग्रेजी सेवा में शामिल नहीं होंगे। हम दिल्ली के सुल्तान के साथ मिलकर देश को औपनिवेशिक शोषण से मुक्त करायेंगे।

जल्द ही देवी सिंह जी ने बल्लभगढ़ के राजा नाहर सिंह की मदद से मुगल बादशाह से एक फरमान जारी करवाया कि देवी सिंह को राया किले का राजा नियुक्त किया जाता है।

फिर खाप का सम्मेलन बुलाया गया और हिंदू रीति रिवाज के अनुसार एक आचार्य द्वारा उनका राजतिलक किया गया। उन्होंने साधु के भगवावस्त्र को उतार कर अपने राजा के धर्म को निभाने हेतु राजशाही पीतांबर धारण किया। फिर 10 मई 1857 को शुरू हुई क्रांति के दिन ही राया में राजा देवी सिंह जी ने अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया।

राजा देवी सिंह का 1857 की क्रांति में योगदान–

राया के आसपास के गोदारा जाटों के 60 गांव के किसान समर्पित भाव से राजा देवी सिंह के नेतृत्व में देश की स्वाधीनता के लिए लड़े थे। (स्त्रोत– एक्स्ट्रेक्ट फ्रॉम द आर्टकिल–देवी सिंह द अननोन मार्टायर ऑफ 1857 रिटेन बाई श्री आर डी उपाध्याय, वॉज पब्लिण्ड इन द हिन्दुस्तान टाइम्स, नवम्बर 1981, पृ० सं०–20–21)।

1857 की क्रांति के दरमियान राजा देवी सिंह के अदम्य साहस की झलक क्षेत्रीय साहित्य में आज भी मिलती है कि ब्रिटिश लोग वीर राजा और उसकी अच्छी तरह से आयोजित सामरिक कुशलता का सामना नहीं कर सके। कलेक्टर को आगरा भाग जाना पड़ा एवं ज्वांइट मजिस्ट्रेट बीमार पड़ गया। राजा देवी सिंह के भय से वह निसंदेह पीला पड़ गया था।

क्रांति के दरमियान 19मई को निक्सन ने जब दिल्ली की ओर कूच किया तब उसके साथ मथुरा जनपद का कलेक्टर थार्न हिल भी कोसी तक गया फिर निक्सन दिल्ली की तरफ आगे बढ़ गया और थार्न हिल की सहायता के लिए 309 सैनिकों की भरतपुर की पैदल फौज और दो तोपें सहायता के लिए छोड़ गया। इस सेना की कमान रघुनाथ सिंह के हाथों में थी। वही रघुनाथ सिंह इस समय तक राजा देवी सिंह का गुप्तचर बन चुका था। इसने देवासेनी एकादशी (जुलाई मास) के दिन विद्रोही होकर गोरे लोगों का वध किया और जब वह राया वापस आए था उसके इस पराक्रम से खुश होकर राजा देवी सिंह ने उसे घर और गांव प्रदान किया। (स्त्रोत – एक्स्ट्रेट फ्रॉम द आर्टकिल–देवी सिंह द अननोन मार्टायर ऑफ 1857 रिटेन बाई श्री आर डी उपाध्याय, वॉज पब्लिण्ड इन द हिन्दुस्तान टाइम्स, नवम्बर 1981, पृ० सं०–20–21)।

उन्होंने 1857 के स्वाधीनता संग्राम में मथुरा जनपद के लिए प्रमुख क्रांतिकारी नेता के रूप में जो शौर्य प्रदर्शन किया था। उसके संबंध में संपूर्ण ब्रज क्षेत्र में लोकगीत गाए जाते रहे जो आज भी प्रचलित हैं। इस लोकगीत की कुछ पंक्तियां निम्न प्रकार हैं:–

'राजा देवी सिंह गजब की फौज बनाई है,
फिरंगी ते घनघोर लड़ाई है,

राये 14 तरफ मोर्चन तोप लगाई है,
करी गदर दरमियान,
साधु राजा ने हाथन बंदूक उठाई है।''

इस समय तक जनपद में क्रांति का विस्तार हो चुका था। 31 मई सन् 1857 को जब मथुरा जनपद में क्रांति का विस्फोट हो चुका था। तब मथुरा के कलेक्टर ने क्रांति से संबंधित सूचना विस्तार से भेजते हुए राजा देवी सिंह की प्रभावशाली भूमिका को इन शब्दों में व्यक्त किया था कि एक फकीर के सामान राजा देवी सिंह नामक व्यक्ति ने अपने आप को राया का राजा घोषित कर दिया है और मथुरा की समस्त जनता पथ भ्रष्ट हो चुकी है परिणाम स्वरूप जनपद में दंगा की संख्या बढ़ रही हैं (''A Fakir type man called Devi Singh has declared himself as a king of Raya and the entire population of Mathura district has been misguided consequently the disturbances in the district has been increaseing both in Number....''). [Source- Telegram sent on 31st May 1857 by Mr Thornhill the collector of Mathura].

राजा देवी सिंह के खौफ का वर्णन तात्कालिक जिला कलेक्टर थार्न हिल ने अपने गुप्त रिपोर्ट में किया है जो अब सार्वजनिक ही चुकी है। इसकी पुष्टि निम्न शब्दों में होती है कि ''15 मई 1857 को कैप्टन निक्सन भरतपुर की सेना के साथ आया। उसके कमान संभाल लेने की खबर व्याप्त हो गई। जनपद का भूभाग उपद्रवग्रस्त हो चुका था। यह उपद्रव मुख्यताः बनियों को लूटने और पुराने जमीदारों द्वारा नए जमीदारों की बेदखली के संबंध में हुए। खजाने में 6.25 लाख रुपया था लोगों की मुद्राओं और प्राप्त गुप्त खबरों से मैंने उन्हें विद्रोही समझा और इस संबंध में आगरा को भी लिखकर भेज दिया। मैंने दृढ़ता से आगरा को खजाना भेजने की संस्तुति भी की खजाने को बांधकर उन्हें गाड़ियों में लदवा दिया था और वह रवाना होने ही वाले थे कि बाहर एक गोली की आवास सुनाई दी और साथ ही एक धावा बोल दिया गया। विद्रोहियों में प्रमुख राजा देवी सिंह इस घटना के समय उपस्थित था। उसके अप्रशिक्षित सैनिकों ने जो राजा के गुप्तचर रघुनाथ सिंह द्वारा विद्रोही बना दिए गए थे अब खुलेआम यूरोपीय पर गोली बरसाना शुरू कर दिया लेकिन सब बचकर शहर की तरफ भाग गए। जहां उन्होंने घोड़े प्राप्त कर लिए और वहां से निकल भागे।

पुराने दस्तावेजों से जो विवरण मिलता है यह पूर्व लिखित घटना से मिलता है। इस प्रकार है कि ''खजाने के लदाव पर मिस्टर वर्लटन ने कहा आगे आगरा की ओर इसे ले चलो और उत्तर मिला नहीं दिल्ली की ओर फिर उन्हें बेईमान कहते हुये पास खड़े भारतीय सैनिक ने बंदूक दाग दी और गोली उसकी छाती में लगी वह घोड़े से गिर गया और तुरंत मर गया। (स्त्रोत– मथुरा गजेटियर वाल्यूम 7 पृ० सं०–215)।

अंगेज अधिकारी वर्लटन की कब्र आज भी सदर (मथुरा) में मालियों की बगीचे में स्थित है।

राजा देवी सिंह ने विद्रोह के समय जेल पर भी धावा बोला। जेल रक्षक अब क्रांति में सम्मिलित हो गए थे। बंदियों को मुक्त कर दिया गया। मुक्त बंदियों और सैनिकों ने दफ्तर, सड़क पर स्थित सरकारी इमारतों, चुंगी और पुलिस चौकियों बंगलो को भी आग के भेंट कर दिया। इस विध्वंशात्मक कार्यों में अनेक गांव के जमीदार भी शामिल हुए थे और उन्होंने सहायता भी दी थी। (Source- Mutiny Narrative N.W.P. Agra, Mathura District, PP. 1-3).

इस प्रकार 1857 की राष्ट्र मुक्ति संघर्ष में राया के राजा देवी सिंह की वीरगाथा और उनकी देशभक्ति की झलक स्पष्ट देखी जा सकती है।

निष्कर्ष

राजा देवी सिंह ने भारत के 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में मथुरा जनपद के लिए अग्रणी क्रांतिकारी व्यक्तित्व के रूप में पहचान पायी। फिर राजा के रूप में लगभग 1 साल तक राया के लोगों के मसीहा बन रहे। उनके राज्य में किसी भी अंग्रेज को प्रवेश करने की अनुमति नहीं थी। यदि अंग्रेज घुसने का प्रयास करते तो उनकी हत्या कर दी जाती थी। राया क्षेत्र के लगभग 80 गांव पर अब तक राजा देवी सिंह का अधिकार हो चुका था। उनकी बढ़ती ताकत को देखकर अंग्रेजी सरकार परेशान हो गई थी और थार्न हिल के नेतृत्व में आधुनिक हथियारों से लैस एक सेना देवी सिंह के विरुद्ध भेजी गई। राजा देवी सिंह ने बहुत ही दिलेरी के साथ उनका सामना किया। इसमें बहुत से क्रांतिकारी शहीद अवश्य हुए परंतु बहुत से अंग्रेज भी मारे गए।

अंत में जब राजा देवी सिंह के पास गोला बारूद समाप्त हो गया तो अंग्रेजों ने जागीर का लालच देकर उन्हें आत्मसमर्पण करने के लिए कहा परंतु राजा देवी सिंह ने ऐसा करने से मना कर दिया और कहा कि ये क्रांति तो भारत माता की आजादी के साथ ही रूक सकती है। उन्होंने कई दिनों तक तलवारों, लाठी, हथियारों एवं गोरिल्ला युद्ध पद्धति से मुकाबला करते रहे परंतु बहुत से क्रांतिकारी शहीद हो गए इसी बीच राजा साहेब को बंदी बना लिया गया और 15 जून सन् 1858 को उनको राया की जनता के सामने ही फांसी पर लटका दिया गया। जब उन्हें फांसी के फंदे पर ले जाया गया तो फांसी के फंदे को चूमते हुए उन्होंने कहा जब तक भारत भूमि गुलामी की जंजीरों में जकड़ी हुई है तब तक हथियार उठाए रखना भले ही कितने ही देवी सिंह के रक्त की आहुति देनी पड़े। हमें यह स्वतंत्रता का यज्ञ सफल बनाना है। इस प्रकार 15 जून सन् 1858 को भारत माता के वीर सपूत राजा देवी सिंह ने स्वतंत्रता की बलि वेदी पर अपने प्राणों को न्योछावर कर दिया। फिर कह सकते हैं कि देशभक्ति के पुरस्कार में जैसा की गुलाम देश का इतिहास साक्षी है, मिलती है फांसी या गोली या संपत्ति का जब्त या विनष्ट होना। ये ही पुरस्कार वीर सपूत राजा देवी सिंह को भी मिला। उन्हें अंग्रेज शासको ने फांसी पर झूला दिया उनकी संपत्ति को जप्त कर, उनके गांव ऑचरू धतोरा स्थित निवास स्थान को भी तोपों से उड़ा दिया। आज इतिहास के पुनरलेखन के दौर में गुमनाम नायकों में शहीद वीर सपूतो में राजा देवी सिंह का बलिदान अवश्य ही याद किया जाना चाहिए।

संदर्भ

1. मथुरा गजेटियर, वल्यूम 7 पृ० सं०–**214, 235, 323**।
2. टेलीग्राम–31 मई 1857 मथुरा कलेक्टर मॉर्क थार्न हिल।
3. हार्वे, नैरेटिव ऑफ इवेंट, पृ० सं०–**7**।
4. स्त्रोत डॉक्टर कृष्ण दत्त बाजपेई का ब्रिज का इतिहास प्रथम खंड पृ० सं०–**77**।
5. स्त्रोत एमीग्राफिया इंडिका जिद 20 पृ० सं०–**362–362**।
6. स्त्रोत श्री पंडित बालमुकुंद चतुर्वेदी –मथुरा का संक्षिप्त इतिहास लेख।
7. कनिंघम मैकेनिकल असिएंट इंडिया हस डिस्क्राइब्ड बाय तमी कोलकाता 1927 पृ० सं०–**134**।

8. स्त्रोत कनिंघम एंसिएंट ज्योग्राफी ऑफ इंडिया स. एस. एन. मजूमदार, कोलकाता 1924, पृ० सं०–**426**।
9. स्त्रोत प्रोफेसर चिंतामणि शुक्ला– अलीगढ़ जनपद का राजनैतिक इतिहास 1979ई. पृ० सं०–**24**।
10. स्त्रोत सम्पादक ज्यो. राधेश्याम द्विवेदी– ब्रज वैभव (प्रकाश भारती अनुसंधान भवन मथुरा) पृ० सं०–**87**।
11. स्त्रोत– डॉ. कृष्णदत्त वाजपेयी– ब्रज का इतिहास, प्रथम खंड (1955 ई.) पृ० सं०–**173**।
12. स्त्रोत प्रोफेसर चिंतामणि शुक्ला– मथुरा जनपद का राजनीतिक इतिहास 1983 ई.।
13. स्त्रोत एन इंक्वायरी इन टू द इकोनॉमिक कंडीशन ऑफ द एग्रीकल्चरल एंड लेबरिंग क्लासेस इन द नॉर्थ वेस्टर्न प्रोविंस एंड अवध (1888) पृ० सं०–**24–25**।